Bio Vet Innovator Magazine

Volume 2 (Issue 8) AUGUST 2025

OPEN ACCESS | WORLD ELEPHANT DAY - 12TH AUGUST | POPULAR ARTICLE

बकरियों व भेड़ में दस्त के कारण और बचाव

आनंद मोहन1 और नीलम कुशवाहा2
[1]सहायक प्राध्यापक (पशु औषधि विज्ञान), पशुचिकित्सा नैदानिक परिसर,
[2]सहयोगी प्राध्यापक, पशु औषधि विभाग,
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, किशनगंज- 855107,
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय पटना
***Corresponding Author:** dr_rinkuanand@rediffmail.com
DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.16993551

Received: August 11, 2025
Published: August 19, 2025
© All rights are reserved by **आनंद मोहन**

दस्त को आमतौर पर मल का पतला होना और पतला के साथ-साथ, बार-बार होना, के रूप में परिभाषित किया जाता है। जब भेड़ और बकरियों में आंतों की बीमारियाँ होती हैं, तो उनके मल में, आमतौर से ज्यादा द्रव या उनका मल ज्यादा नरम और बदबूदार हो जाता है। दस्त एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या है, जिसके कारण पशु में निर्जलीकरण हो जाता है। इसलिए दस्त के अंतर्निहित कारण के निदान के साथ निर्जलीकरण का उचित द्रव प्रबंधन के माध्यम से उपचार करना चाहिए।

दस्त के कारण:

भेड़ और बकरियों में दस्त एक जटिल और बहु-कारक बीमारी है। जानवरों में दस्त, अंतःपरजीवी, जीवाणु, विषाणु, प्रोटोजोआ इत्यादि के संक्रमण से हो सकता है। स्वस्थ जानवरों में यह संक्रमण, संक्रमित जानवरों से या जानवरों के वातावरण से भी आ सकता है। अनुचित प्रबंधनं और पोषण के कारण भी दस्त हो सकता है। दस्त कई अलग-अलग बीमारियों जैसे अफारा, अम्लमयता, लैमिनाइटिस, तांबे की कमी, एफ्लैटॉक्सिन विषाक्तता, एनाफिलेक्टिक सदमा (शॉक), पादप विषाक्तता, गुर्दे में खराबी, सेलेनियम की विषाक्तता, एंटरोटॉक्सीमिया (*क्लॉस्ट्रीडियम परफ्रिंजेस टाइप सी* एवंडी) साल्मोनेलोसिस, *ई.कोलाई,* कैप्राइन हर्पिस वायरस और बकरी-पोलियो वायरस, इत्यादि का लक्षण भी हो सकता है। वयस्क बकरियों और भेड़ों में दस्त आंतरिक परजीवी के कारण होता है। दस्त का कारण जो भी हो, अंतर्निहित क्रियाविधि निम्नलिखित में से एक या इनका संयोजन होती है-

- आंत में अधिक तरल स्राव,
- आंत मे अधिक मात्रा में तरल पदार्थ का एकत्र होना,
- आंतों की तरल पदार्थ को अवशोषित करने की क्षमता में कमी,
- आंतों की संकुचनशीलता में वृद्धि,

➢ दस्त के कारकों को मुख्यतः दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है: संक्रामक कारक और गैर-संक्रामक कारक।

दस्त के संक्रामक कारक:

जीवाणु	इ. *कोलाई*, *साल्मोनेला*, *क्लॉस्ट्रीडियम परफ्रिंजेंस*, *कैम्पिलोबैक्टर*, जोन्स रोग जीवाणु, इत्यादि
विषाणु	रोटावायरस, कोरोना वायरस, बोवाइन वायरल डायरिया वायरस, कैप्राइन हर्पीस वायरस, बकरी पोलियो वायरस, इत्यादि
परजीवी	गोलकृमि, फीताकृमि और चपटाकृमि, *क्रिप्टोस्पोरिडियम, कोक्सीडिया, जियार्डिया,* इत्यादि

दस्त के गैर-संक्रामक कारक:

पोषण	आहार में परिवर्तन, अपच, निम्न गुणवत्ता वाला दूध प्रतिपूरक, खीस का अपर्याप्त सेवन, निम्न गुणवत्ता वाला खीस, ख़राब गुणवत्ता वाला पानी, सूखे चारे का अपर्याप्त सेवन, फफूंदयुक्त चारा, खाद्य-एलर्जी, आदि।
प्रबंधन	बाड़े में अत्यधिक भीड़भाड़, कार्बोहाइड्रेट का अधिक सेवन, आदि।

मनोवैज्ञानिक तनाव	मेमनों को दूध छुड़ाना, देखभाल में कमी, मौसम की चरम स्थितियां (अत्यधिक ठंड), भेड़ व बकरियों की ढुलाई, आदि।
विषाक्तता	• पादप विषाक्तता जैसे घनेरी, जहरीला या विषैला आड़ू, कनेर, कसौंदी, आदि। • एफ्लैटॉक्सिन विषाक्तता] मोलिब्डेनम विषाक्तता, आदि।
खनिज की कमी	ताँबा, सेलेनियम, आदि।
अन्य बीमारियां	गुर्दे की विफलता, एनाफिलेक्टिक आघात, आदि।

कोई भी बाह्य-पदार्थ/कारक जो बकरी और भेड़ के पाचन तंत्र की प्रक्रिया को बाधित करती है, दस्त का कारण हो सकती है। जरूरत से ज्यादा कार्बोहाइड्रेट खिलाना, चारा/घास/चरने में त्वरित परिवर्तन, इत्यादि गंभीर रुमिनल-अम्लमयता का कारण बन सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप पाचन तंत्र अपना सामान्य कार्य बंद कर देता है। ऐसे में जानवरों में दस्त होता है और उनकी मृत्यु भी हो सकती है।

भेड़ व बकरी के एक महीने से कम आयु के बच्चों में दस्त बहुत आम समस्या है, जिसे नियोनेटल-डायरिया-कॉम्प्लेक्स कहते हैं। आमतौर पर यह ठंड के मौसम के दौरान या भारी बारिश के दिनों में होता है। दस्त का प्रमुख कारण कुपोषण और इ. *कोलाई, साल्मोनेला* जीवाणु, *क्रिप्टोस्पोरिडियम* और रोटा विषाणु का संक्रमण होता है। जीवाणु और विषाणु के संक्रमण के परिणामस्वरूप आंतों में सूजन हो जाती है। आंतों में अतिरिक्त/अधिक तरल पदार्थ का रिसाव और स्राव बढ़ जाता है।

गोलकृमि और प्रोटोजोआ भी अक्सर मेमनों में दस्त का कारण होते हैं। मेमनों में अंतःपरजीवी का संक्रमण अक्सर मल-से-मौखिक संपर्क द्वारा प्रेषित होती हैं। संक्रमण की गति और तीव्र हो जाती है, जब मेमनों को भीड़भाड वाले बाड़े में रखा जाता है।

दस्त के कारण मेमनों में निर्जलीकरण, अम्लता, इलेक्ट्रोलाइट की कमी, अल्पशर्करारक्तता और रक्त की कमी हो जाती है। मेमना इतना कमजोर हो जाता है कि खड़ा भी नहीं हो पाता है। शरीर का तापमान सामान्य से कम हो जाता है, और मेमना दूध पीने की क्षमता खो देता है। उसका थूथन सूख जाता है और शरीर ठंडा पड़ जाता है। एक महीने से कम उम्र के मेमनों की प्रतिरक्षा प्रणाली पूर्णतः विकसित नहीं होती है, जिस कारण दस्त से ग्रसित मेमनों में मृत्यु का खतरा बना रहता है।

दस्त के लक्षण:

दस्त से ग्रसित भेड़ व बकरी में ढीला पानीदार मल, कमजोरी, निर्जलीकरण, भूख न लगना, पेट दर्द और ऐंठन, वजन में कमी, शरीर के पिछले हिस्से और पिछले पैरों में मल का संदूषण, इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं। मल का रंग असामान्य हो सकता है। मल से अक्सर एक दुर्गन्ध आती है। गंभीर मामलों में मल में रक्त या श्लेष्मा भी हो सकती है।

निदान:

दस्त के प्रभावी प्रबंधन के लिए दस्त के कारण का निदान आवश्यक है। कारण का निर्धारण करते समय, लक्षण शुरुआत होने की अवधि, भेड़ व बकरियों की प्रभावित संख्या और पशु-चारे के प्रबंधन को ध्यान में रखना चाहिए। दस्त से ग्रसित जानवर के मल का सूक्ष्मदर्शी द्वारा परीक्षण करके अंतःपरजीवी(कृमि)और प्रोटोजोआ (*कोक्सीडिया*) का पता लगाया जा सकता है। कृमि-भार और कोक्सीडिया-अंडकोशिका संक्रमण का सटीक निदान केवल सूक्ष्म मल-परीक्षण से ही संभव है।

मल का बाह्य-अवलोकन, संक्रमण के प्रकार का संकेत देते हैं। जैसे- काला दस्त कोक्सीडिया के संक्रमण का संकेत देता है। स्लेटी या सफेद दस्त, इ. *कोलाई* या *साल्मोनेला* - संक्रमण की ओर इशारा करता है। हरा-दस्त आमतौर पर इंगित करता है कि पशु ने बहुत अधिक ताजा हरा चारा खाया है। भूरा-दस्त, जो कभी-कभी लाल रंग का हो जाता है, उन भेड़ व बकरी में आम है जिनके नवजात-बच्चे हैं।

दस्त के निश्चित कारक के पहचान के लिए प्रयोगशाला में मल-नमूनों का सूक्ष्मजीव-वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाता है, जिसमें मल-नमूनों पर जीवाणु, विषाणु और परजीवी परीक्षण शामिल हैं। प्रयोगशाला में रक्त-द्रव्य (सीरम)-नमूनों पर विषाणु परीक्षण किया जाता है।

उपचार व प्रबंधन:

दस्त के प्राथमिक प्रबंधन में, निम्नलिखित उपाय शामिल हैं-

- निर्जलीकरण को रोकने के लिए ताजा स्वच्छ पानी दें।
- स्वच्छ पानी के साथ इलेक्ट्रोलाइट्स दें, या दोनों दें, जिससे संक्रमित बकरी/भेड़ में जलयोजन और तरल संतुलन बना रहे।

Citation: आनंद मोहन, नीलम कुशवाहा. (2025). बकरियों व भेड़ में दस्त के कारण व बचाव. **In Bio Vet Innovator Magazine (Vol. 2, Issue 8, pp. 36–39). Bio Vet Innovator Magazine. https://doi.org/10.5281/zenodo.16993551**

- बकरी के पाचन तंत्र में अम्ल और गैसों को संतुलित करने के लिए मीठा सोडा दें।
- सूखा घास खिलाना और अनाज को कम या सीमित करना।
- रूमेन मे अच्छे बैक्टीरिया को संतुलित करने के लिए प्रोबायोटिक्स दें।
- बाडें को साफ रखना। यदि आवश्यक हो तो दिन में कई बार साफ करें।
- मक्खियों को दूर रखने के लिए पशु को स्वच्छ रखें।
- किसी संभावित बीमारी को फैलने से रोकने के लिए नए बकरी व भेड़ को संगरोध में रखें।

दस्त के कई कारक आत्म-सीमित होते हैं, इसलिए उपचार का प्रमुख लक्ष्य, पशु को शारीरिक रूप से सक्रिय रखना है, और निर्जलीकरण को रोकना है। बीमार पशु को स्वस्थ पशु से अलग रखें। दस्तग्रसित पशु में, बड़ी मात्रा में तरल पदार्थ और इलेक्ट्रोलाइट्स (जैसे सोडियम और क्लोरीन)की क्षति हो जाती है, जिस कारण निर्जलीकरण हो जाता है। यदि पशु पानी पी रहा है तो निर्जलीकरण को रोकने के लिए स्वच्छ और ताज़े पानी में इलेक्ट्रोलाइट मिलाकर पिलायें। यदि बकरी गंभीर रूप से निर्जलित है, और शरीर का तापमान सामान्य से कम (100° सेल्सीयस से कम) है तो कभी भी द्रव न पिलायें। ऐसी स्थिति में अंतःशिरा द्रव चिकित्सा (लेक्टेड रिंगेर्स घोल) कारगर साबित होता है।

नियमित अंतराल पर बकरी/भेड़ के शरीर के तापमान की निगरानी करें। जब शरीर का तापमान सामान्य(101.5° से 103.5° सेल्सीयस)से ज्यादा हो तो बुखार की दवा का उपयोग करें। संक्रामक आंत्रशोथ से जुड़े एंडोटॉक्सिन के संभावित प्रभावों को कम करने के लिए गैर-स्टेरॉयडल एंटी-इंफ्लेमेटरी दवाएं दें। आंत की गतिशीलता को कम करने वाली दवाओं का उपयोग ना करें। प्रोबायोटिक्स, अक्सर आंत के सूक्ष्म जीव को संतुलित व सामान्य करने के लिए दिए जाते हैं। यदि दस्त का कारण आहार है तो आहार में सांद्रित चारा को कम करें और भूसा या सूखे चारे की मात्रा को बढ़ा दें। रुमिनल एसिडोसिस के उपचार के लिए मीठा सोडा (सोडियम बाइकार्बोनेट) दें। अंतःपरजीवी हो, तो कृमि-निवारक दवाएं दें।

दस्त के इलाज में जीवाणुरोधी (एंटीबायोटिक) दवाओं का उपयोग बहुत अधिक किया जाता है। एंटीबायोटिक्स तब उपयोगी होते हैं, जब जीवाणु संक्रमण प्राथमिक संक्रामक होते हैं, या जहां अतिरिक्त जीवाणु संक्रमण का खतरा अधिक होता है। जब जानवर विषाणु या प्रोटोजोआ से संक्रमित होते हैं तो आमतौर पर एंटीबायोटिक दवाओं के साथ उपचार उपयोगी नहीं होता है। ऐसे में एंटीबायोटिक दवा खिलाने से आंत में जीवाणु की सामान्य आबादी बाधित हो सकते है, जिसके परिणामस्वरुप पाचन क्रिया प्रभावित हो जाती है। व्यापक-स्पेक्ट्रम एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग उन जानवरों में सहायक हो सकता है जिनमें दस्त के कारण सेप्टीसीमिया होता है। कोक्सीडीओसिस के मामले में सल्फा-एंटीबायोटिक्स या एमप्रोलियम का उपयोग करें।

यदि दस्त का कारण विषाक्तता है (जब पशु, विषैले पौधे, रसायन, या अन्य विषैला पदार्थ या विषैले पदार्थों से दूषित चारा खा लेते हैं), तो सक्रियित चारकोल दें। आमतौर पर इसे एक घंटे के अंदर इस्तेमाल करना चाहिए। यह आंत में जहर को अवशोषित करने में प्रभावी है, ताकि जहर आँतों से रक्त में अवशोषित न हो पाएं। विषाक्तता में रेचक-औषधि का उपयोग, हल्के दस्त को प्रेरित करने के लिए किया जाता है, ताकि पशु के पाचन तंत्र से विषाक्त पदार्थ को निष्कासित करने के लिए उत्तेजित किया जा सके। रेचक-औषधि निर्जलीकरण भी करते हैं, इसलिए रेचक-औषधि के साथ अंतःशिरा द्रव चिकित्सा भी देना चाहिए।

रोकथाम:

भेड़ और बकरियों को आहार में पर्याप्त फाइबर दें। आहार में वृद्धि धीरें-धीरें करें। चारा और पानी के मल संदूषण को कम करें और मानसिक-तनाव को कम करें। बकरियों व भेड़ों को संतुलित आहार खिलाएं। प्रत्येक बकरी व भेड़ को उसकी आवश्यकताओं के अनुसार ही राशन खिलाया जाना चाहिए। जो बकरियाँ/भेड़ दूध देती हैं, उन्हें अन्य की तुलना में अधिक अनाज दें। बकरियों और भेड़ों में दस्त की रोकथाम में निम्नलिखित बातों का ध्यान का रखना चाहिए -

- हर समय सूखे चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करें।
- रक्ताल्पता के लिए, नियमित रुप से आंख के नेत्रश्लेष्मला की जाँच से करें।
- वैकल्पिक कृमि-निवारण का अभ्यास करें ताकि अंतःपरजीवी कृमि-निवारक के प्रति प्रतिरोधी न बन जाएं।
- अंतःपरजीवियों के लिए नियमित मल परीक्षण करें।

Citation: आनंद मोहन, नीलम कुशवाहा. (2025). बकरियों व भेड़ में दस्त के कारण व बचाव. **In Bio Vet Innovator Magazine (Vol. 2, Issue 8, pp. 36–39). Bio Vet Innovator Magazine. https://doi.org/10.5281/zenodo.16993551**

- कृमि-निवारक नियम विकसित करें, या यदि जानवर को इसकी आवश्यकता हो तो ही दें।
- चरागाह के समय को तब तक सीमित रखें जब तक सामंजस्य स्थापित न हो जाए।
- राशन में बदलाव धीरे-धीरे करें, और राशन में अनाज की मात्रा को धीरे-धीरे बढ़ाएं।
- स्वच्छता का ध्यान रखें। बाडें को साफ रखें।
- बाडें में आने वाले नए जानवरों को तब तक संगरोध में रखें, जब तक कि वे स्वस्थ नहीं माने जाते हैं।

Citation: आनंद मोहन, नीलम कुशवाहा. (2025). बकरियों व भेड़ में दस्त के कारण व बचाव. **In Bio Vet Innovator Magazine (Vol. 2, Issue 8, pp. 36–39). Bio Vet Innovator Magazine. https://doi.org/10.5281/zenodo.16993551**